

स्वतंत्रता संग्राम में शिक्षकों की सहभागिता

डॉ० (श्रीमती) सरोज गोस्वामी¹

¹प्रधानाचार्या, पीएम0श्री0 रा0बा0इ0 कॉलेज, चरखारी, महोबा (उ0प्र0)

Received: 20 Feb 2026 Accepted & Reviewed: 25 Feb 2026, Published: 28 Feb 2026

Abstract

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शिक्षकों ने केवल शिक्षा प्रदान करने तक अपनी भूमिका सीमित नहीं रखी, बल्कि राष्ट्रीय चेतना, स्वदेशी भावना और देशभक्ति का व्यापक प्रसार किया। उन्होंने विद्यार्थियों एवं समाज को औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जागरूक किया तथा सत्य, अहिंसा, स्वावलंबन और राष्ट्रीय एकता के मूल्यों को सुदृढ़ किया। अनेक शिक्षकों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रत्यक्ष भाग लेकर त्याग और बलिदान का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका योगदान भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा राष्ट्र निर्माण के इतिहास में सदैव प्रेरणास्त्रोत रहेगा।

मुख्य शब्द: स्वतंत्रता संग्राम, शिक्षक, राष्ट्रीय चेतना, जनजागरण, स्वदेशी आन्दोलन, राष्ट्रवाद, शिक्षा, राष्ट्र निर्माण।

Introduction

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री आरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने मन की बात के 3 अगस्त 2020 के सम्बोधन में छात्रों और शिक्षकों को स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायकों की कहानियों को सबके सामने लाने के प्रेरित किया था। अतः यह हम सभी शिक्षकों के लिए अनिवार्य हो जाता है कि इस दिशा में सार्थक प्रयास करे, इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने यह छोटा सा प्रयास किया है। निः संदेह भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हुए संघर्ष और चुनौतियों में कई गुमनाम नायक शामिल थे, और इनमें हमारे गुरुजन/शिक्षक भी सम्मिलित थे। उन्हें भी ब्रिटिश सत्ता द्वारा दमन, उपेक्षा, भेदभाव और तिरस्कार का सामना करना पड़ा था। तब कहीं जाकर इन सभी नायकों के शामिल परिश्रम का फल 15 अगस्त, 1947 को देश ने देखा।

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में शिक्षकों के योगदान सहभागिता या उनकी भूमिका की चर्चा से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि स्वतंत्रता आन्दोलन की शुरुआत कब और कैसे हुई ? ब्रिटिश लोग, भारत में राजनीतिक सत्ता 1757 में पलासी के युद्ध के बाद जीत गए, यही वो समय था जब अंग्रेज भारत आए और लगभग 200 साल तक राज किया। वस्तुतः भारत में स्वतंत्रता संघर्ष कई राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों के श्रृंखला का परिणाम था, जिसने राष्ट्रवाद को बढ़ाने का काम किया। इसका पहला प्रभाव 1857 के विद्रोह के रूप में सामने आया, यह ईस्ट इण्डिया कम्पनी के खिलाफ पहला संगठित आन्दोलन कहलाया। शुरुआत 10 मई 1857 को मेरठ में हुई, कारण—लार्ड डलहौजी की राज्य हड़प नीति लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि और सैनिकों को चर्बी युक्त कारतूस का उपयोग करने पर बाध्य करना था। यह विद्रोह और प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, सिपाही विद्रोह और भारतीय विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है। 34 वीं बंगाल नेटिव इन्फेन्ट्री कंपनी के सैनिक मंगल पांडे ने एक सिपाही विद्रोह के रूप में इस आन्दोलन को मेरठ में शुरू किया था, यह विद्रोह भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चला। नाना साहिब, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई, बख्त खान, बेगम हजरत महल आदि इस आन्दोलन में शामिल हुए थे। पर शीघ्र ही इस विद्रोह को दबा दिया गया और अब भारत का प्रशासन **गर्वनर जनरल**

(कम्पनी के) से लेकर **वायसराय** (राजा का वैयक्तिक प्रतिनिधी) में निहित कर ब्रिटेन की साम्राज्जी को भारत की साम्राज्जी घोषित कर दिया गया । डिवाइड एण्ड रूल (फूट डालो और राज करो) की नीति का शुभारम्भ यही से हुआ ।

1905 में भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड कर्जन द्वारा 19 जुलाई को बंगाल विभाजन की घोषणा कर दी, इस विभाजन के कारण उत्पन्न उच्च स्तरीय राजनीतिक अशांति से विवश होकर 1911 में बंगाल के पूर्वी और पश्चिमी हिस्से को पुनः एक होने का आदेश जारी करना पड़ा । इसी बंग-भंग आन्दोलन से विद्यालयों के अन्दर आजादी का बीज फूटा और यहीं से छात्र और शिक्षक स्वाधीनता आन्दोलन में कूद पड़े । कुछ प्रमुख विद्यालयों और शिक्षकों का उल्लेख करना प्रसंगिक होगा—

वाराणसी का बंगाली टोला इण्टर कालेज ऐसा कालेज है जिसके छात्र और शिक्षकों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी जान देकर देश की आजादी में भूमिका निभाई थी । इस विद्यालय के संस्थापक योगीराज श्यामा चरण लाहरी थे, इन्हीं की प्रेरणा से इस विद्यालय के शिक्षक और विद्यार्थियों में पराधीन भारत में मुक्ति अर्थात् आजादी का बोध जाग्रत हुआ, 1905 के बंग-भंग आन्दोलन से पूरे देश में राष्ट्रीयता की जो लहर बही उसने इस विद्यालय के अंदर भी आजादी का बीजारोपण कर डाला और यहां के छात्र और शिक्षक स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े । इस विद्यालय में पढ़ाते हुए जो शिक्षक और छात्र भारत माता के कदमों में शहीद हो गये उनमें थे— सुशील कुमार लाहिड़ी, इन्हें मृत्यु दण्ड मिला, सचिन्द्र नाथ सान्याल, काकोरी कांड में आजीवन कारावास, सुरेन्द्र चन्द्र भट्टाचार्य, काकोरी कांडमें 7 वर्ष कारावास, जितेन्द्र नाथ सान्याल, बनारस लाहौर षडयंत्र में सश्रम कारावास, प्रियनाथ भट्टाचार्य, बनारस षडयंत्र में 2 वर्ष कारावास, रविन्द्र नाथ सान्याल और सुरेन्द्र नाथ मुखर्जी, बनारस षडयंत्र में कारावास, विभूति भूषण गांगुली, नजरबंद हुए, विजयनाथ चक्रवर्ती और रमेश चन्द्र जोयेरदार को बनारस से निर्वासन झेलना पड़ा ।

रुहेलखण्ड में आजादी की लड़ाई का मुख्य केन्द्र बरेली था, यहां के बरेली कालेज में स्वतंत्रता की ज्वाला धधक उठी बरेली कालेज के सीने में आजादी की अनेक लड़ाइयां दफन हैं । यहां के शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों ने भी अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ बिगुल फूँका था । यहां के शिक्षक मौलवी महमूद हसन और फारसी के शिक्षक कुतुबशाह, बरेली के क्रांतिकारी नबाब खान बहादुर खान के समस्त आदेश और फरमान प्रेस में छापकर लोगो के मध्य बांटते थे । कुतुबशाह की इन गतिगविधियों से क्रुद्ध होकर अंग्रेजो ने उन्हें काला-पानी की सजा देकर अण्डमान भेज दिया, वही उनकी मौत हुई ।

सर्व-विधा की राजधानी काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का देश के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर संविधान निर्माण तक विशेष योगदान रहा । यहां के शिक्षक और छात्र स्वतंत्रता आन्दोलन में स्वयं को समर्पित किये हुये थे । हम सभी जानते हैं कि भारत रत्न पं० मदन मोहन मालवीय ने भिक्षा मांगकर 1916 ई० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापना की थी । डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ० एनी बेसेन्ट, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, सुभाषचन्द्र बोस, जय प्रकाश नारायण, कमलापति त्रिपाठी, गोविन्द मालवीय, आचार्य नरेन्द्र देव, भगवान दास, जगजीवन राम, सर सुन्दर दास आदि ऐसे अनेक नाम हैं जो बी०एच०यू० से सम्बंधित रहे हैं । आजादी के बाद जब संविधान निर्माण किया जाने लगा तब 389 व्यक्तियों में से 89 व्यक्ति इसी विश्वविद्यालय से थे । हम सभी जानते हैं कि हमारे संविधान का प्रतीक चिन्ह आशोक स्तम्भ है, जिसके नीचे लिखा हुआ है— सत्यमेव जयते यह शब्द मुण्डकोपनिषद से लिया गया है , इसका सुझाव मालवीय जी ने दिया था ।

देश के लिए कुछ कर गुजरने वाले शिक्षक, सेनानियों की जब बात आती है तो बिहार के मांडू के शिक्षक मोतीराम जी का नाम बड़े आदर से लिया जाता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी मोतीराम जी का जन्म हजारिबाग जिला के करियातपुर गांव में गरीब नाई परिवार में हुआ था, इन्हें शीघ्र ही शिक्षक की नौकरी मिल गई, पर वर्ष 1920-21 में जब गांधी जी का अहसयोग आन्दोलन चला, तो मोतीराम जी नौकरी से इस्तीफा लेकर स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े। इन्हें अंग्रेजों ने पटना के बांकीपुर और गिरिडीह जेल में लगभग $5\frac{1}{2}$ वर्ष तक बन्द रखा था।

उ०प्र० के अम्बेडकर नगर के इलिफात गंज में स्वतंत्रता की अलख जगाने वाले जयराम वर्मा जनपद के एच०टी०इण्टर कालेज, टांडा में शिक्षक थे। स्वतंत्रता सेनानियों की बैठकों में हिस्सा लेने से नराज होकर कालेज के तत्कालीन प्रबंधक ने इन्हें त्यागपत्र देने को मजबूर कर दिया। इस्तीफा के बाद जयराम जी पूर्ण रूप से आजादी की लड़ाई में लग गये। सत्याग्रह और अंग्रेज विरोधी अनेक आन्दोलन में भाग लेते रहे, फलतः लगभग पौने दो वर्ष जेल की सजा काटनी पड़ी। वाराणसी की जेल में रहते इनकी पत्नी का स्वर्गवास हो गया, जेलर ने कहा—माफी मांग लो और घर जाकर पत्नी का अंतिम संस्कार करो पर स्वाभिमान के धनी जयराम जी ने माफी मांगने से मना कर दिया था।

येसे अनेक ज्ञात-अज्ञात शिक्षक इतिहास में भरे पड़े हैं, जिन्होंने अपने देश को अंग्रेजी हुकूमत से छुड़ाने में अपना सर्वस्व होम कर दिया। हम सब सौभाग्य शाली हैं कि हमारी किलकारियां स्वतंत्र भारत में गूंजी **महर्षि अरविन्द** के शब्दों में— शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से सींचकर उन्हें शक्ति में परिवर्तित करते हैं। राष्ट्र के वास्तविक निर्माता उस देश के शिक्षक होते हैं। **कोठारी आयोग** के अनुसार—भारत के भविष्य का निर्माण कक्षाओं में हो रहा है।

निःसंदेह एक राष्ट्र भक्त शिक्षक अपनी शिक्षण शैली से छात्रों में, युवाओं में और सम्पूर्ण जन-मानस में राष्ट्रीयता की भावना का विकास कर सकता है, स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान हमारे शिक्षकों ने अपनी इस ऊर्जा को न सिर्फ महसूस किया बल्कि पूर्ण मनोयोग से उसे क्रियान्वित कर इस देश को गुलामी से मुक्त करवाने में अपना सर्वस्व होम कर दिया। हमारे गुरुजनों ने हमारे हृदय में राष्ट्रीयता की जो ज्वाला धधकाई है, आशा है हम सब उससे कुन्दन बन कर निकलेगें। और न सिर्फ भारत बल्कि सम्पूर्ण विश्व में **शान्ति और एकता** की स्थापना के लिए अहर्निश स्वयं को समर्पित की देंगे।

संदर्भित ग्रंथ

- 1— भारत का स्वतंत्रता संघर्ष— लेखक: बिपिन चन्द्र, प्रकाशक: ओरिएंट ब्लैकस्वान (पूर्व में ओरिएंट लॉन्गमैन), नई दिल्ली।
- 2— आधुनिक भारत— लेखक: सुमित सरकार, प्रकाशक: मैकमिलन इण्डिया लिमिटेड, नई दिल्ली।
- 3— भारत में अंग्रेजी राज— लेखक: रामविलास शर्मा, प्रकाशक: राजकमल प्रकाशन प्रा०लि०, नई दिल्ली।
- 4— आधुनिक भारत का इतिहास—लेखक बिपिन चन्द्र, प्रकाशक: ओरिएंट ब्लैकस्वान (पूर्व में ओरिएंट लॉन्गमैन), नई दिल्ली।

5— भारत का आधुनिक इतिहास (कक्षा—12)— प्रकाशक: National Council of Educational Research and Training नई दिल्ली।

6— इतिहास दर्पण (शोध पत्रिका)— प्रकाशक: भारतीय इतिहास अनुसंधान से संबंधित विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों द्वारा प्रकाशित (नवीनतम अंक के अनुसार)।